ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO. 169-171
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

गाँधी जी का आर्थिक विचार

अनिल कुमार
राजनीति विज्ञान विभाग– किसान पी0 जी0 कालेज, तमकुही रोड, सेवरही, कुशीनगर (उ0प्र0), भारत

सारांश : ***'गांधीजी न तो एक व्यक्ति थे और न एक विचार, अपितु वह विचारों का एक समूह थे एक ऐसे व्यक्ति जिसने समाज की चिन्ता के हर पक्ष को छूआ और चिन्तन की असीम गहराई तक पहुँचे यही कारण है कि उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक सभी क्षेत्रों से सम्बद्ध विचार प्रस्तुत किए, जिन्हें समग्र रूप से ' गांधीवादी दर्शन' कहा जाता है।***

आज जबकि हम आर्थिक मोर्चे पर मिली असफलताओं से दो–चार हो रहे हैं, समस्याएँ हमारे सामने सुरक्षा की भाँति मुहँ फाड़े खड़ी है, विशाल व्ययराशि वाली पंचवर्षीय योजनाएँ और एकवर्षीय योजनाएं भी स्थिति में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं ला पाई हैं, तो ऐसी स्थिति में हमें समस्या के हल के लिए किसी पाश्चात्य व्यवस्था या चिन्तक के विचारों को उलटने–पलटने के स्थान पर किसी ऐसी व्यवस्था या चिन्तक का हाथ थामना चाहिए जो हमारी अर्थव्यवस्था की नब्ज को जानता हो। तात्पर्य यह है कि जिसके विचार मुख्यतः भारतीय अर्थव्यवस्था पर आधारित हो निःसन्देह 'गांधीदर्शन'– इस दृष्टिकोण से सर्वाधिक उपयुक्त है।

गांधीजी आर्थिक विचारों की किसी भी निश्चित योजना में विश्वास नहीं करते थे वह अर्थशास्त्र को जीवन का एक अंग समझते थे, इसलिए उनके आर्थिक विचार उनके सामान्य जीवनदर्शन का ही एक भाग है 'प्रो0 वकील' ने ळंदकीपंद म्बवदवउपब जैवनहीज के सम्पादक के रूप में उसकी भूमिका में सही ही लिखा है कि– "One has to interpret Gandhiji's economic ideas and build up what may be described as gandhian Economic Thought from what he did and said in this connection."

गांधीजी के जीवन में सबसे अधिक महत्व 'सादा जीवन तथा उच्च विचार' सम्बन्धी सिद्धान्त का रहा, एक व्यावहारिक आदर्षवादी होने के नाते उनको यह ज्ञात हुआ कि दर्षन में आधुनिक सभ्यता के दोषों के उपचार छुपे हुए हैं, आधुनिक उद्योगवाद मानवीय मान्यताओं को त्यागकर मनुश्य में आवश्यकताओं को बढ़ाने तथा भौतिक धन प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न करता है, इसलिए गांधीजी ने कहा कि अनन्त सुख प्राप्त करने का एकमात्र साधन सादा जीवन है।

गांधीजी अपरिग्रह तथा विभिन्न प्रकार की असमानताओं के विध्वंश के पक्षपाती थे उनके अनुसार यदि किसी व्यक्ति को उत्तराधिकार में बड़ी सम्पत्ति प्राप्त हुई है या किसी ने व्यापार एवं उद्योग के लाभ से बड़ी मात्रा में धन एकत्र किया है, तो सम्पूर्ण सम्पत्ति उसकी नहीं वरन् सारे समाज की है, पूँजीपतियों को वह सम्पत्ति का थातीदार (Trustee) कहते थे। 'हरिजन' के 13 अप्रैल, 1938 के अंक में वह स्पश्ट रूप से कहते हैं कि उन्हें थातीदार सिद्धान्त में इतना अधिक विष्वास है कि वे यह समझते हैं कि इसकी सहायता से भूमि पर समानता की स्थिति स्थापित हो जाएगी।

The Economics of Khadi के पृष्ठ संख्या 7 पर गांधीजी लिखते हैं– ''मैं समय और परिश्रम की बचत करना चाहता हूँ, किन्तु मानव जाति के बहुत थोड़े भाग के लिए नहीं सभी के लिए आज मशीन केवल थोड़े से ही व्यक्तियों को करोड़ों की पीठ पर चढ़ने में सहायता करती है, '' गांधीजी के उपर्युक्त विचार के पीछे मूल कारण यह था कि वह जानते थे कि भारत जैसे अधिक जनसंख्या वाले तथा गरीब देश के लिए मशीनों का प्रयोग लाभप्रद नहीं होगा उनका विचार था कि अधिक जनसंख्या को काम पर लगाने की दृष्टि से उत्पादन की ऐसी प्रणालियाँ काम में लानी होगी जिनमें अधिकाधिक श्रमिकों की खपत हो।

'The harijan' के 2 नवम्बर, 1934 के अंक में गांधीजी लिखते हैं कि– ''यदि आप व्यक्तिगत उत्पाद को लाखों गुना बढ़ा दें तो क्या यह एक बड़े पैमाने पर उत्पादन नहीं कहलाएगा, किन्तु मैं समझता हूँ कि आपके बड़े पैमाने का उत्पादन टेक्नीकल शब्द है जिसका अर्थ थोड़े से थोड़े व्यक्तियों से अत्यधिक जटिल मशीनों द्वारा उत्पादन प्राप्त करना है मैंने इसीलिए कहा कि यह गलत है, मेरी मशीन बहुत ही सीधी–सादी होनी चाहिए जिसको मैं लाखों व्यक्तियों के घरों में रख सकता हूँ ''–इस प्रकार गांधीजी कुटीर तथा ग्रामीण उद्योगों के विकास के पक्ष में थे जो भारत की शाश्वत् हो गई निर्धनता की रामबाण औषधि साबित हो सकती है।

वह उद्योगों के न तो केन्द्रीकरण के पक्ष में थे और न ही उनके राष्ट्रीयकरण के पक्ष में थे, क्योंकि उनका विचार

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

था कि उससे प्रजातन्त्र की समस्याओं का समाधान नहीं हो सकेगा और अत्यधिक नगरीकरण तथा शहरों में भीड़–भाड़ को बढ़ावा मिलेगा।

ग्रामीण सर्वोदय गांधीजी का महान आदर्श था सर्वोदय का अर्थ यह है कि व्यक्ति, समाज और देश सभी का सर्वोन्मुखी विकास हो।

गांधीजी की सर्वोदय योजना के प्रमुख बिन्दु ये हैं–

(1) आत्मनिर्भरता का लक्ष्य रखते हुए विभिन्न उद्योग धन्धों का क्षेत्रीय विकास।

(2) विशाल उत्पादन के दोशों के निवारण हेतु यंत्रीकरण का न्यूनतम उपयोग।

(3) सम्पत्ति के वितरण में कम से कम विषमता, तथा

(4) राष्ट्रीय महत्त्व के बड़े उद्योगों पर सार्वजनिक नियंत्रण।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि उनके आर्थिक विकेन्द्रीकरण का प्रतीक चरखा है।

गांधीजी के अनुसार वास्तविक भारत शहरों में न होकर ग्रामों में था और वह इस वाक्यांश से पूर्णतः सहमत थे कि भारतीय ग्राम ''गोबर के ढेर पर बने अस्वच्छ मकानों के समूह के समान है, ''गांधीजी अपनी सर्वोदयी योजना के माध्यम से चाहते थे कि प्रत्येक ग्राम स्वावलम्बी गणतंत्र में परिणत हो जाए वह भारत में स्वषासन वाली पुरानी परम्परा को पुनः स्थापित करना चाहते थे, क्योंकि उनका विचार था कि उसमें, ''उपभोग एवं वितरण के साथ–साथ ही उत्पादन होता था और उसमें मौद्रिक अर्थव्यवस्था का कुचक्र भी नहीं था उत्पादन विदेशी बाजारों के लिए न होकर तुरन्त उपभोग के लिए किया जाता था समाज का सम्पूर्ण ढाँचा अहिंसा पर आधारित था ''–उनके अनुसार यह भारत की अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण की सबसे उत्तम विधि होगी।''

सन् 1943–44 में गांधीजी ने अपने जीवन का सबसे भीषण अकाल देखा था खाद्य समस्या पर विचार व्यक्त करते हुए वह सुझाव देते हैं, जैसे–सीमित उपभोग, अनाज की चोर बाजारी रोकना, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, निर्यातों पर नियंत्रण आदि, गांधीजी खाद्य नियंत्रण के विरूद्ध थे, क्योंकि उनके अनुसार इससे बनावटी कमी उत्पन्न हो जाती है।

जनसंख्या सम्बन्धी समस्या के विषय में वह उन लोगों से सहमत नहीं थे जो जनसंख्या निरोधक उपायों के पक्ष में थे गांधीजी ब्रम्हचर्य एवं संयम द्वारा सन्तति निरोध के पक्ष में थे इसलिए उनका कहना था कि सेक्स सम्बन्धी शिक्षा का प्रसार किया जाए जिसका उद्देश्य काम भावना पर विजय प्राप्त करना हो।

वस्तुतः इस समस्त विष्लेशण का अभिप्राय यह है कि 'गांधीदर्शन' लगभग सभी आर्थिक समस्याओं का निदान प्रस्तुत करता है आज की आर्थिक समस्याओं के मद्देनजर हमें फिर इसी अवतारी पुरूश का हाथ थामना चाहिए, क्योंकि ''वर्तमान आर्थिक समस्याओं का निदान गांधीदर्षन में ही है,''।

गांधीजी के मतानुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जीविका करने के लिए कुछ षारीरिक परिश्रम अवश्य करना चाहिए, गांधीजी बौद्धिक परिश्रम को परिश्रम नहीं समझते थे, अतः बौद्धिक परिश्रम हमें खाने का अधिकार देने के लिए पर्याप्त नहीं, उनके मतानुसार बौद्धिक श्रम बुद्धि के सन्तोश का साधन है और शारीरिक श्रम षरीर की तुश्टि अर्थात् खाने–पीने का अतः शारीरिक परिश्रम का इतना महत्व होने के कारण अधिकांश उत्पादन उसी के द्वारा होना चाहिए। श्रम की बचत करने वाले साधनों, मशीन आदि का उपयोग सीमित मात्रा में ही होना चाहिए, उनके अनुसार उत्पादन मुख्यतः आवश्यकता की पूर्ति के लिए होगा, व्यापार या लाभ के लिए नहीं इसका यह अर्थ नहीं कि गांधीजी बड़े उद्योगों अथवा रेल, तार, जहाज आदि के विरूद्ध थे मशीनों का उपयोग तो अनिवार्य है, पर मशीन–मशीन में अन्तर है, हम इन्हें तीन श्रेणियों में विभक्त करते हैं– मास्क, पोषक और शोषक, तोप, बन्दूक, मशीनगन, बम इत्यादि मारक व बड़े–बड़े कारखाने षोशक है। अतः ये त्याज्य है, रेल, जहाज, सिलाई की मषीन, हल, चरखा, फाबड़ा आदि पोशक मषीन है। अतः इनका उपयोग होना चाहिए इसी से गांधीजी सदैव ग्रामोद्योग और खादी पर बल देते थे भारत जैसे गरीब देश के लिए गृह उद्योग का बहुत महत्व है इन्हीं के द्वारा गरीब जनता के षोशण तथा उसकी दरिद्रता को समाप्त किया जा सकता है।

गांधीजी के अनुसार वितरण का प्राकृतिक सिद्धांत यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी तात्कालिक आवश्यकता भर को ले, यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवष्यकता भर ले और संग्रह के चक्कर में न पड़े तो, किसी को भी कमी न पड़े, भौतिक समृद्धि से बहुधा नैतिक पतन की आशंका बनी रहती है। अतः गांधीजी का आदर्श था 'वितरण की समानता' विषमताओं को दूर करने और समता की अधिकाधिक प्राप्ति करने के दो उपाय हैं इनमें एक तो सम्यवादी उपाय है, जिसके अनुसार धनिकों का धन

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

उनसे जबरदस्ती छीनकर उसे जनहित में लगाया जाए, दूसरा यह है कि धनी स्वेच्छा से, कर्त्तव्य समझकर, अपना धन सर्वसाधारण के हित में लगाए और अपने को निर्धनों का अभिभावक या प्रन्यासी समझें ग्रीन की भाँति गांधीजी का भी यही मत था कि पूंजी का उपयोग स्वभावतः सामाजिक होता है इस दृष्टि से

गांधीजी पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों के विकल्प के रूप में एक तीसरी व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे, जिसमें दोनों के गुणों का समन्वय हो और दोनों ही के दोषों का अभाव इस प्रकार गांधी दर्षन विशुद्ध भारतीय है तथा अपनी पृथक् विशेषता रखता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हरिजन–12 दिसम्बर, 1938।
2. यंग इण्डिया– 20 दिसम्बर 1928।
3. महात्मा गांधी, जीवन और दर्शन–रोमा रोला।
4. गांधीजी मानवता का भविष्य–राम जी सिंह, 2000।
5. महात्मा गांधी, 'अहिंसा और सत्य' 1968, उ0प्र0 गांधी स्मारक निधि सेवापुरी, वाराणसी।
6. वी0 पी0 वर्मा–आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2006, पृ0 390।
7. प्रभाश जोशी–गॉधी की पोथी पूजा के काम, द पब्लिक, 4 मार्च 2009, पृ0–52।
8. मो0 क0 गांधी–हिन्द स्वराज्य, डायमंड बुक्स, दिल्ली, 2009, पृ0–4।
9. कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, भाग–10 प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, पृ0–601।
10. प्रोस्पेक्ट्स, द क्वाटरली रिव्यू ऑफ एडुकेशन, पेरिस, युनेस्को, भाग–23, नं0–3/4, 1993, पृ0–508।
11. मो0 क0 गांधी–मेरे सपनों का भारत, राजपाल, दिल्ली, 2008, पृ0–165।
12. जे0 डी0 सेठी, गांधी टूडे, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0, 1978, पृ0–168।
13. वीन0 ए0 स्टडीज, इन इकोनामिक डेवलपमेन्ट लन्दन, 1958, पृ0–7।
14. जवाहर लाल नेहरू इन आटोबायोग्राफी, लन्दन, बोडले डिड 1936, पृ0–528।
15. अग्रवाल ए0 एन0 "इण्डिया बेसिक इकॉनोमिक इन्फारमेशन 1986, नेषनल नई दिल्ली 1986, पृ0–21।

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14